पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-९-१०, मार्च-अप्रैल, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में सम्पन्न

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४

(बांये से) डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता; डॉ.सी.वी.पाण्डेय (चिकित्सा विशेषज्ञ-नाक,कान,गला); श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम; श्री महेश चन्द्र द्विवेदी, पूर्व डी.जी.पी.(उ.प्र.); श्री उदयवीर सिंह यादव, वरिष्ठ पी.सी.एस.; आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, व्याकरणाचार्य।

सम्मानित विभूतियाँ

(1) श्री आनन्द कुमार आर्य को 'आर्य शिखर रत्न' उपाधि श्री पाल प्रवीण भेंट करते हुए (2) श्री रमनलाल अग्रवाल ने श्री नरेन्द्र भूषण को एवं (3) श्री उदयवीर सिंह यादव ने श्रीमती मीना दीक्षित को सम्मानित किया

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

वैदिक विचारधारा के प्रतिनिधि पत्र 'आर्य लोक वार्ता' का १६वाँ पड़ाव

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह - २०१४

आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य 'आर्य शिखर रत्न' सम्मान से विभूषित हुए

नरेन्द्र भूषण (साहित्य), श्रीमती मीना दीक्षित (योग) को 'आर्य लोक वार्ता सम्मान-2014'

जगदीश खत्री, भूपेन्द्र मेहरोत्रा, सत्य प्रकाश आर्य एवं दीपक दर्शन को 'स्मृति सम्मान'

श्रीमती कमलेश पाल को 'आर्यश्री सम्मान'; अनूषा, मलयज, अमर्त्य, वेदांजलि को 'अरुणोदय' पुरस्कार

अमृत खरे, डॉ.कैलाश निगम, उमेश राही, डॉ.नासिर, रंजना शर्मा, श्रीशरत्न का विमुग्धकारी काव्यपाठ

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों के सर्वप्रमुख रंगमंच- रायउमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग ने 1 मार्च 2014 शनिवार को एक ऐसे गरिमापूर्ण आयोजन का साक्षी बनने का सुअवसर प्राप्त किया- जो आये दिन होने वाले आयोजनों से सर्वथा भिन्न था। यह आयोजन था- 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-2014'। सायं 5.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक चले कार्यक्रम ने सहृदय श्रोताओं को तृप्त किया। प्रतिवर्ष सम्पन्न होने वाले 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' की इस कड़ी में साहित्य, योग, कला, राजनीति, पत्रकारिता, प्रशासन, चिकित्सा, शिक्षा, व्यापार आदि क्षेत्रों के एक से एक दिग्गज उपस्थित थे। लखनऊ में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के इतिहास में इस आयोजन से एक नवीन गौरवपूर्ण अध्याय जुड़ गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, पूर्व डी.जी.पी. ने की तथा संचालन श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय ने किया।

शुभारम्भ : दीप प्रज्वलन एवं राष्ट्रगान

समारोह का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि श्री आनन्द कुमार आर्य के साथ ही डॉ. वेद प्रकाश आर्य, डॉ. सी. वी. पाण्डेय, महेशचन्द्र द्विवेदी, उदयवीर सिंह यादव तथा आचार्य ओजोमित्र शास्त्री ने बारी-बारी से ज्ञानदीपक की वर्तिकाएं प्रकाशित कीं। तत्पश्चात् राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' का सुमधुर गायन श्रीमती अर्चना एवं वन्दना ने किया। वैदिक राष्ट्रगीत 'आ ब्रह्मन्...' का गायन सभी ने किया और आर्ष गुरुकुल के आचार्य विश्वव्रत शास्त्री ने वैदिक ऋचाओं का सस्वर पाठ किया। डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया। मंचस्थ अतिथियों का स्वागत आर्य लोक वार्ता परिवार की ओर से माल्यार्पण द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि का स्वागत एवं अभिनन्दन

अतिथियों के स्वागत के क्रम में सबसे पहले मुख्य अतिथि श्री आनन्द कुमार आर्य के अभिनन्दन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 'आर्य लोक वार्ता' के १६वें वर्ष में प्रवेश के सन्दर्भ में प्रधान सम्पादक ने १६ गुलाब के फूलों की माला मुख्य अतिथि को पहनाई। ज्ञातव्य है कि आर्य लोक वार्ता के प्रतिष्ठापक होने का गौरव श्री आनन्द कुमार आर्य को प्राप्त है। प्रधान सम्पादक ने श्री आनन्द कुमार आर्य के सम्बन्ध में उल्लेख किया कि मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र टाण्डा में प्रेम और सद्भाव की गंगा प्रवाहित करने का श्रेय आपको है। आपके द्वारा संचालित मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज तथा डी.ए.वी.एकेडमी इत्यादि संस्थाओं में हिन्दू-मुस्लिम बालिकायें एकसाथ शान्ति और सुरक्षा के माहौल में आधुनिक शिक्षा ग्रहण करती हैं तथा यज्ञ-हवन-संध्या इत्यादि कार्यक्रमों में खुशी और तन्मयता के साथ सम्मिलित होती हैं।

श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने सम्बोधन में आधुनिक समाज की विकृतियों का जिक्र किया और उनके निराकरण की सर्वसाधारण से अपील की। आर्य लोक वार्ता की असाधारण उपलब्धियों का हवाला देते हुए आपने कहा कि समाचार पत्र की महत्ता का आकलन उसकी गुणवत्ता पर होना चाहिए, प्रसार संख्या पर नहीं।

अध्यक्ष का स्वागत

समारोह के अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, पूर्व डी.जी.पी. का स्वागत करते हुए प्रधान सम्पादक ने कहा कि श्री द्विवेदी ने उ.प्र.पुलिस सेवा के शीर्ष पद से सेवा निवृत्ति के पश्चात साहित्य और देश की सेवा का व्रत लिया। अपने आवास पर सुरुचिपूर्ण साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन किया तथा साहित्य की सभी विधाओं कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, निबंध पर लेखनी चलायी। कविताओं में जहां दार्शनिकता का पुट है वहां कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं पर आपकी मजबूत पकड़ परिलक्षित होती है। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती नीरजा द्विवेदी भी साहित्य साधना में तल्लीन रहती हैं और ज्ञान प्रसार सेवा संस्थान के माध्यम से कमजोर वर्ग के बच्चों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा वितरित करती हैं। श्री द्विवेदी का आर्य लोक वार्ता पर स्थापना काल से ही वरद हस्त रहा है, यह हमारे गर्व का विषय है।

विशिष्ट अतिथि का स्वागत

सम्मान समारोह के अनेक प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण करने हेतु विशेष रूप से आमंत्रित श्री उदयवीर सिंह यादव, वरिष्ठ पी.सी.एस. का स्वागत करते हुए प्रधान सम्पादक ने कहा कि प्रदेश के न्यायप्रिय एवं कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारियों में श्री यादव को शीर्ष स्थान प्राप्त है। प्रदेश के अन्य स्थानों का छोड़ दिया जाय तो लखनऊ में ही आपने उपजिलाधिकारी, सिटी मजिस्ट्रेट, अपर जिलाधिकारी तथा जिला विकास अधिकारी जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर सफलतापूर्वक कार्य किया। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कुल सचिव के रूप में भी आपकी सेवाएँ सराहनीय रहीं। विगत १६ वर्षों से आर्य लोक वार्ता को आपकी शुभकामनाएँ सुलभ रहीं। प्रधान सम्पादक ने आपकों भी १६ गुलाब के फूलों की माला पहनाकर स्वागत किया। सम्प्रति आप लखनऊ में सम्भागीय खाद्य नियंत्रक (R.F.C.) पद पर तैनात हैं।

स्वागताध्यक्ष का भाषण

सम्मान समारोह २०१४ हेतु मनोनीत स्वागताध्यक्ष आचार्य ओजोमित्र शास्त्री विद्यावारिधि का अभिभाषण मुद्रित करा कर श्रोताओं में वितरित किया गया। अभिभाषण का एक-एक शब्द भावपूर्ण और अर्थगर्भित था जिसका उनकी सुयोग्य भांजी श्रीमती अर्चना द्वारा वाचन किया गया।

उद्घाटन भाषण : डॉ. सी. वी. पाण्डेय

सन् २०१२ के 'आर्य लोक वार्ता सम्मान' से सम्मानित लखनऊ के ख्यातिलब्ध चिकित्सक डॉ. चन्द्र विजय पाण्डेय (नाक, कान, गला विशेषज्ञ, जो अपनी संक्षिप्त नाम- डॉ.सी.वी.पाण्डेय के नाम से अधिक जाने जाते हैं) के उद्घाटन भाषण की सभी ने मुक्तकंठ से सराहना की। डॉ.पाण्डेय ने अपने प्रभावपूर्ण भाषण में आर्य लोक वार्ता की अनेक विशेषताओं और खोजपूर्ण बातों को जनता के समक्ष लाने की प्रवृत्ति की सराहना की तथा वैदिक विचारधारा के महत्त्व को रेखांकित किया। साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की मौलिक सेवाओं पर भी प्रकाश डाला। आपने कहा कि रामकृष्ण मिशन इत्यादि संस्थाओं ने मात्र चिकित्सा क्षेत्र तक अपने को सीमित रखा जबकि आर्य समाज ने सामाजिक समस्याओं के रचनात्मक समाधान की पहल की तथा आजादी की लड़ाई में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। आपने कहा- आर्य लोक वार्ता आधुनिक युग की सशक्त आवाज है।

आर्य लोक वार्ता के नवीन अंक का विमोचन

पूर्व परम्परा का परिपालन करते हुए आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक ने आर्य लोक वार्ता के सद्यः प्रकाशित अंक को विमोचन हेतु अतिथियों के समक्ष प्रस्तुत किया। मान्य अतिथियों ने फरवरी अंक का विमोचन किया जिसके मुखपृष्ठ पर सरदार वल्लभभाई पटेल का १९५० में आर्य समाज के मंच से दिया गया ऐतिहासिक और जीवन का अंतिम भाषण प्रकाशित किया गया है।

आर्य लोक वार्ता सम्मान 2014

श्री नरेन्द्र भूषण

श्री नरेन्द्र भूषण काशी विश्वविद्यालय से एम.एस-सी.गणित तथा एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद पी.सी.एस.(वित्त) में चयनित हुए तथा गाजीपुर, इलाहाबाद, आजमगढ़ इत्यादि अनेक जनपदों में मुख्य कोषाधिकारी के रूप में कार्य करते हुए अपर निदेशक कोषागार पद से सेवानिवृत्त हुए। साहित्य से आप पहले से ही जुड़े हुए थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात आपने गजल, गीत, छन्दबद्ध, मुक्तछन्द तथा लोकगीत इत्यादि सभी विधाओं में लिखना प्रारंभ किया। लेखन के साथ ही कवि गोष्ठियों एवं कवि सम्मेलन के मंचों पर भी आपको समान रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त है। योगविद्या में भी नरेन्द्र भूषण जी की गहरी अभिरूचि है तथा भारतीय योग संस्थान, दिल्ली के लखनऊ केन्द्र के आप प्रमुख हैं। 'अनन्त अनुनाद' के आप संस्थापक-संरक्षक हैं तथा 'सुन्दरम्' संस्था के अध्यक्ष हैं 'सुन्दरम्' संस्था के माध्यम से आप प्रतिमास जानकीपुरम में साहित्यिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों का आयोजन करते रहते हैं।

श्रीमती मीना दीक्षित

विश्व भर में योग की वीणा बजाने वाले योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की सत्प्रेरणा से लखनऊ में योगसाधना के दैनिक कार्यक्रमों की शुरूआत हुई। योग परम्परा के कार्यक्रमों का प्रभावीं स्वरूप- पतंजलि योग समिति (पूर्व) द्वारा विकसित हुआ; जिसके अध्यक्ष श्री पीयूषकान्त हैं। पीयूष जी के संरक्षण में पतंजलि योग समिति की महिला इकाई ने योग कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित विस्तार प्रदान किया। महिला योग समिति की प्रभारी हैं- श्रीमती मीना दीक्षित। अगस्त २००८ से निरन्तर सी.एम.एस.गोमती नगर में सायंकाल योगप्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करती हैं, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ आरोग्य लाभ करते हुए योग और अध्यात्म का शिक्षण प्राप्त कर रही हैं। श्रीमती दीक्षित का मानना है कि महिलाएँ अपने अमूल्य शरीर के महत्व को समझें तथा अपने आपको बड़ी और गंभीर

प्रत्यूष रत्न पाण्डे - संचालक

वंदना एवं अर्चना द्वारा वंदे मातरम गायन

आचार्य वेदव्रत शास्त्री

महेश चन्द्र द्विवेदी - अध्यक्ष

उदयवीर सिंह यादव

डॉ. सी. वी. पाण्डेय

'विनम्र' (दायें) को कविरत्न उपाधि

श्रीमती सिद्धि कुमारी (बायें) क्रमशः अनुष्का, मलयज, अमर्त्य, वेदांजलि के साथ

रंजना शर्मा सम्मानित

बीमारियों की गिरफ्त में न आने दें।

'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादि भाष्य' तथा उपनिषद इत्यादि आर्ष ग्रन्थों का मीना जी सतत् स्वाध्याय करती हैं तथा यह स्वीकारती हैं कि ऋषिवर दयानन्द के जीवन और साहित्य से उन्हें नया आलोक मिला है। सौम्य, शालीन और सुदृढ़ व्यक्तित्व की धनी मीना दीक्षित का आदर्श ध्येय वाक्य है- 'भव तापेन हि तप्तानां, योगो हि परम साधनम्'।

सुमधुर वाणी और शुद्ध उच्चारण की धनी श्रीमती निमिषा वाजपेयी ने श्रीमती मीना दीक्षित के मानपत्र को पढ़कर सुनाया तथा उन्हें समर्पित किया। श्रीमती मीना दीक्षित को सम्मान सूचक स्मृति चिन्ह श्री उदयवीर सिंह, वरिष्ठ पी.सी.एस. ने अपने कर कमलों द्वारा भेंट किया। इसी संदर्भ में श्रीमती निमिषा वाजपेयी की भाषण शैली से प्रभावित होकर श्रीमती मीना दीक्षित तथा श्री उदयवीर सिंह द्वारा उन्हें शाल एवं स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। श्रीमती मीना दीक्षित ने अपने संक्षिप्त संबोधन में योग विद्या की महत्ता के साथ आर्य लोक वार्ता की समाजोपयोगी सेवाओं की सराहना की। आपने कहा- मुझे निःसन्देह आर्य लोक वार्ता में प्रकाशित सामग्री से नवीन प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। आपने आर्य लोक वार्ता के प्रचार प्रसार हेतु सहयोग का संकल्प दुहराया।

विनम्र को 'कविरत्न' की उपाधि

'दानवीर भामाशाह' नामक सफल खण्डकाव्य के यशस्वी प्रणेता श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' जो आर्य लोक वार्ता परिवार के एक महत्वपूर्ण सदस्य हैं- को उनके कृतित्व के सम्मानार्थ 'कविरत्न' की उपाधि प्रदान की गई। यह उपाधिपत्र श्री विनम्र को प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने प्रदान किया।

स्मृति-सम्मान : नई शुरूआत

पं.गंगाधर शर्मा स्मृति सम्मान श्री जगदीश खत्री को

२०१४-सम्मान समारोह में महान् समाजसेवियों की स्मृति में सम्मान प्रदान करने की नवीन परम्परा की शुरूआत की गई। इस शृंखला में सर्वप्रथम आर्य समाज सीतापुर के भू.पू. प्रधान, उ.प्र. की प्रथम विधान सभा के सदस्य, सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति पं. गंगाधर शर्मा की पावन स्मृति में आर्य समाज चन्द्रनगर लखनऊ के प्रधान श्री जगदीश खत्री (पूर्व पुलिस उपाधीक्षक) को सम्मानित किया गया। श्री जगदीश खत्री को समारोह के अध्यक्ष माननीय श्री महेश चन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) ने स्मृतिचिन्ह, शाल इत्यादि भेंट कर सम्मानित किया। विशेषताओं से परिपूर्ण श्री खत्री जी का व्यक्तित्व बेजोड़ है और आर्य लोक वार्ता के तो वे प्राणस्वरूप हैं। उल्लेखनीय है कि श्री जगदीश खत्री को यह सम्मान आर्यसमाज सीतापुर के सौजन्य से प्रदान किया गया। आर्य समाज सीतापुर के कोषाध्यक्ष श्री शिवशंकर लाल वैश्य ने स्वयं उपस्थित होकर श्री खत्री जी को सम्मानित किया। आर्य समाज सीतापुर के प्रधान चौधरी रणवीर सिंह जी किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं हो पाये।

शान्तिस्वरूप शास्त्री स्मृति सम्मान श्री दीपक कुमार दर्शन को

समुज्ज्वल कीर्ति अर्जित करने वाली लखनऊ आर्यसमाज की विभूतियों में बड़ा ही पवित्र नाम है- री पं.शान्तिस्वरूप शास्त्री वेदालंकार का। यद्यपि आपका जन्म बदायूँ में हुआ था, तथापि आपने अपना कार्यक्षेत्र मुख्यतः लखनऊ को बनाया। आपने गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि अर्जित की तथा पंजाब विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। लखनऊ में आपने व्यायज ऐंग्लो विद्यालय में संस्कृत अध्यापक के रूप में सेवा की, साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक के रूप में आप आर्य समाजों में प्रवचन तथा पौरोहित्य का कार्य भी करते रहे। आर्यसमाज नरही लखनऊ के प्रधान पद को कई वर्ष तक आपने सुशोभित किया। चौधरी चरण सिंह की पुत्री का विवाह संस्कार सम्पन्न कराने का श्रेय आपको प्राप्त है। शुद्धि कार्यक्रम के माध्यम से आपने अनेक नर-नारियों को विधर्मी होने से बचाया। आर्य महिलाओं में अग्रणी श्रीमती आशा आर्या आपकी पुत्री हैं तथा ध्येयनिष्ठ श्री सन्तोष कुमार आर्य आपके पुत्र हैं। विख्यात समाजसेवी श्री रमेश नारायण सक्सेना आपके जामाता हैं।

श्री शान्तिस्वरूप शास्त्री की स्मृति में नई पीढ़ी के आर्य सेनानी श्री दीपक कुमार दर्शन को आर्य लोक वार्ता ने सम्मानित किया। श्री दीपक जी पं. शान्तिस्वरूप जी के सुपौत्र हैं। आपके पिता श्री सुदर्शन चन्द्र सक्सेना अब इस संसार में नहीं हैं। दीपक जी ने पारिवारिक विरासत को भलीभांति सँभाला। लखनऊ विश्वविद्यालय से बी. एस-सी.करने के बाद आप रेलवे में एक महत्वपूर्ण पद पर सेवा कर रहे हैं। व्याकरणविद् पं.धर्मानन्द शास्त्री से आपने अष्टाध्यायी की शिक्षा ग्रहण की। सम्पूर्ण परिवार को वैदिक आदर्शों में ढालने का श्रेय श्री दीपक को प्राप्त है। आपकी पत्नी श्रीमती सुनीता दर्शन पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करती हैं। दीपक जी मृदुभाषी, निष्ठावान, सत्यासत्य का विवेक करने वाले आर्य रत्न हैं। आप आर्य लोक वार्ता के होता सदस्य हैं तथा निरन्तर लेखन और स्वाध्याय में आपकी अभिरुचि देखी जाती है।

मिश्रीलाल आर्य स्मृति सम्मान श्री भूपेन्द मेहरोत्रा को

स्मृति सम्मान शृंखला की द्वितीय कड़ी के रूप में टाण्डा के सुविख्यात समाजसेवी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.मिश्रीलाल आर्य की गरिमामयी स्मृति में टाण्डा के ही प्रख्यात व्यापारिक प्रतिष्ठान के संचालक तथा सर्वजन सौहार्द के प्रेरक श्री भूपेन्द्र मेहरोत्रा को सम्मानित किया गया। श्री भूपेन्द्र मेहरोत्रा को सम्मानित करने हेतु लखनऊ के प्रख्यात साहित्यकार, कवि एवं लखनऊ व्यापार मंडल के अग्रणी नेता श्री रमनलाल अग्रवाल को आमंत्रित किया गया। श्री रमन जी ने स्मृति चिन्ह, स्नेह सूचक शॉल अर्पित करते हुए श्री मेहरोत्रा की सहृदयता को उचित सम्मान प्रदान किया।

चौधरी नारायणदीन आर्य स्मृति सम्मान श्री सत्य प्रकाश आर्य को

प्रदेश में आर्य समाजों के कार्यक्रम को स्थायित्व प्रदान करने एवं विकसित करने का श्रेय जिन कर्तव्य परायण आर्यजनों को दिया जाता है; उनमें प्रातःस्मरणीय चौधरी नारायणदीन आर्य का नाम अग्रगण्य है। अनेक वर्षों तक आर्य समाज हसनगंजपार (डालीगंज) लखनऊ के प्रधान पद को सुशोभित करने वाले श्री नारायणदीन ने आदर्श शिक्षक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की तथा अनेक छात्रों का जीवन निर्माण किया। मृत्यु से पूर्व आपने वसीयतनामा लिखकर अपना अंतिम संस्कार 'संस्कार विधि' के अनुरूप करने की इच्छा व्यक्त की थी। आपकी गौरवमयी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी को सम्मान प्रदान करने हेतु आमंत्रित किया गया। आपने प्रख्यात ओजस्वी आर्य भजनोपदेशक एवं शिक्षक आचार्य श्री सत्य प्रकाश आर्य (बाराबंकी) को स्मृति चिन्ह इत्यादि भेंट करके 'नारायणदीन आर्य स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया।

एक सामान्य बालक अपनी कर्तव्यपरायणता से किस प्रकार घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए आर्य समाज की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाता है और देशव्यापी ख्याति अर्जित करता है- श्री सत्य प्रकाश आर्य का जीवन इसका ज्वलंत उदाहरण है। श्री सत्य प्रकाश आर्य का आर्य लोक वार्ता एवं प्रधान सम्पादक डॉ.आर्य से बड़ा ही आत्मीय संबन्ध रहा है। श्री सत्यप्रकाश जी ने एक ओजस्वी रचना सुनाकर वातावरण को स्नेह-स्निग्ध बना दिया। आर्यनेता श्री आनन्द कुमार आर्य ने श्री सत्य प्रकाश आर्य की सत्यनिष्ठा एवं कर्मठता की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एक और नई शुरूआत : 'आर्यश्री' एवं 'अरुणोदय' सम्मान

'आर्यश्री सम्मान' श्रीमती कमलेश पाल को

२०१४ में मातृशक्ति को नमन करते हुए 'आर्यश्री' सम्मान तथा नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करने के लिए 'अरुणोदय' पुरस्कार की शुरुआत की गई। २०१४ का 'आर्यश्री' सम्मान श्रीमती कमलेश पाल को समर्पित किया गया। अलीगंज वैदिक सत्संग की मुख्य संचालिका श्रीमती कमलेश का जन्म मुजफ्फर नगर के ऐतिहासिक सिसौली ग्राम में उसी परिवार में हुआ था; जहां पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की ससुराल थी। आर्य लोक वार्ता की ओर से श्रीमती कमलेश पाल को यह सम्मान श्रीमती रश्मि त्रिपाठी द्वारा भेंट किया गया। श्रीमती कमलेश पाल प्रख्यात समाजसेवी श्री पाल प्रवीण की सहधर्मिणी हैं तथा प्रवीण जी की सामाजिक गतिविधियों के मूल में कमलेश जी की प्रेरणाएँ कार्य करती रहती हैं।

श्रीमती निमिषा वाजपेयी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए विशिष्ट अतिथि

श्री सुरेश चन्द्र तिवारी (बायें) के साथ संचालक श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय

'अरुणोदय' पुरस्कार

नई पौध को पल्लवित होते देख किसे प्रसन्नता नहीं होती? उदीयमान नई पीढ़ी को पुरस्कृत करने हेतु महिला समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त श्रीमती सिद्धिकुमारी वाजपेयी (लक्ष्मणपुरी, लखनऊ) को आमंत्रित किया गया। आपने संचार माध्यम के स्नातक पाठ्यक्रम की छात्रा कु.अनूषा त्रिपाठी; स्प्रिंगडेल कालेज इन्दिरानगर के प्रतिभाशाली छात्र मलयज त्रिपाठी तथा उपयुक्त वय में उपनयन धारण करने वाले ब्र.अमर्त्य को पुरस्कार प्रदान किया। तीन वर्ष की बालिका वेदांजलि वाजपेयी ने हाथ जोड़कर अभिवादन करके सबका मन मोह लिया।

चुनिन्दा कवियों का काव्यपाठ

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह में हिन्दी के चुनिन्दा कवियों का काव्यपाठ प्रारंभ से ही चर्चित रहा है। इस वर्ष के कवियों ने अपनी कविताओं से अभूतपूर्व समां बांधा तथा अंत तक श्रोताओं को काव्य प्रवाह में भावमग्न रखा। कवि सम्मेलन का संचालन श्री श्रीशरत्न पाण्डेय ने अपनी चुटीली शैली में किया। जिन चुनिन्दा कवियों ने काव्यांजलि प्रस्तुत की उनमें- अमृत खरे, रंजना शर्मा, डॉ.मिर्जा हसन नासिर, डॉ.कैलाश निगम, उमेश श्रीवास्तव 'राही', डॉ.वेद प्रकाश आर्य, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, नरेन्द्र भूषण तथा रमनलाल अग्रवाल प्रमुख थे। रंजना शर्मा की रचनाओं को विशेष सराहना मिली।

समापन तथा आभार प्रदर्शन

अंत में समारोह के अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने अपनी मार्मिक वक्तव्य तथा 'वृत्त' शीर्षक दार्शनिक अन्दाज की कविता का पाठ किया। आपने 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित सामग्री के उच्च स्तर तथा मौलिकता की सराहना की तथा भव्य आयोजन हेतु आयोजक एवं श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आभार प्रदर्शन तथा शान्तिपाठ के साथ २०१४ का यह सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ

काव्य पाठ : (बायें से) श्री अमृत खरे, डॉ. कैलाश निगम, डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर, उमेश श्रीवास्तव 'राही'

श्रोता - संकुल - प्रेक्षागृह

श्री नरेन्द्र भूषण, रंजना शर्मा, रमन लाल अग्रवाल, श्रीश रत्न पाण्डेय (संचालक)

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४

स्वागताध्यक्ष आचार्य ओजोमित्र शास्त्री

पूर्व कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या का अभिभाषण

समारोह के अध्यक्ष महोदय, मुख्य अतिथि महोदय, उद्घाटनकर्त्ता डॉ.पाण्डेय तथा समारोह में पधारे हुए सज्जनवृन्द तथा मातृशक्ति!

किसी पत्रिका या पत्र के जीवन यात्रा की अवधि, चिरस्थायिता, प्रचार प्रसार के लिए सम्पादक की योग्यता प्रथम कारण रूप में समझी जाती है। इस दृष्टि से इस पत्रिका को ऐसे विद्वान्, विवेकी, उदात्त विचारक संपादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य का प्राप्त होना, पत्रिका का सौभाग्य मानना चाहिए। आर्य लोक वार्ता के सम्पादकीय लेख संग्रहणीय होते हैं जिनकी उपयोगिता सर्वकालीन उपयोगी मानी जा सकती है। जो इतिहास के साथ आधुनिक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए भविष्यत् की उन्नति के निर्देश, आदेश, उपदेश, अवधान, विधान प्रक्रिया द्वारा किसी भी समाज को सुपथ पर चलने को बाध्य करते हैं। इस पत्र की यह भी विशेषता है कि प्राचीन महापुरुषों के साथ आधुनिक सामाजिक लेखकों, कहानीकारों, उपन्यास कारों की स्मृतियाँ आर्य समाज संस्था से जोड़कर आधुनिक आर्य समाज के सदस्यों के हृदय में, स्वाभिमान, उत्साह, प्रगति के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। जैसे विगत वर्ष में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के विषय में दो विद्वानों द्वारा उपन्यास सम्राट का आर्य समाज से सहानुभूति ही नहीं आर्य समाज का कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में वर्णन प्रस्तुत किया गया था। श्री प्रेमचंद जी आर्य समाज हमीरपुर के सदस्य ही नहीं अपितु उसके उत्सवों में विद्वानों की व्यवस्था भी करते थे। जिनमें हिन्दू विश्वविद्यालय के अरबी फारसी के प्रोफेसर श्री मौलवी महेश से अधिक प्रभावित थे। उस लेख में शुद्धि के लिए प्रयत्न करते हुए कहानी भी लिखी थी, जिसका शीर्षक था ''खून पानी हो गया'' जिसका भाव था- नवयुवक द्वारा मुस्लिम कन्या से विवाह करने पर आर्यसमाज हमीरपुर द्वारा प्रेरित करने पर भी ब्राह्मणों द्वारा स्वीकार न करना था।

इस वर्ष छत्रपति शिवाजी के यज्ञोपवीत संस्कार में कठिनाइयों, विरोध का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए यह दर्शाया है- जो व्यक्ति हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब से लोहा ले रहा हो- उसको यज्ञोपवीत कराने में कितना परेशान किया गया। जिसके व्यय में शिवाजी का कोष ही समाप्त हो गया था। किन्तु स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ने इस यज्ञोपवीत का सरलीकरण करके प्रत्येक सुधारवादी मानव के लिए सहज कार्य बना दिया। जिसके कारण आज दलित जाति के लोग भी यज्ञोपवीत धारण कर पौरोहित्य कर रहे हैं। श्री चिन्तामणि शास्त्री दिल्ली आर्य समाजों में श्रेष्ठ पुरोहित माने जाते हैं। यह सब स्वामी जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' की कृपा है। यह विचार भी डा.रामप्रकाश जी के लेख से स्पष्ट होता है।

अक्टूबर २०१३ के अंक में श्री निहाल सिंह जी ओम-सुधा नामक प्रमाणित पत्रिका के आधार पर भारत के आदर्श प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को आर्य समाज के अछूतोद्धार कार्य संचालन के लिए उपदेशक नियुक्त किया गया था। श्री लालबहादुर शास्त्री जी को अछूतों को यज्ञोपवीत पहनाने का कार्य भी सौंपा गया था। यज्ञोपवीत धारण करा कर, बीड़ी सिगरेट, शराब आदि से छुटकारा दिलाना आर्य समाज द्वारा यज्ञोपवीत धारण कराने का मुख्य उद्देश्य था। श्री राजाराम मोहनराय द्वारा संचालित 'प्रार्थना समाज' का मुख्य नियम था कि जाति पाति प्रदर्शक यज्ञोपवीत त्याग कर ही प्रार्थना समाज का सदस्य बन सकता था। किन्तु आर्य समाज का उद्देश्य था जीवन को उत्तम बनाने के लिए यज्ञोपवीत प्रतिज्ञा के रूप में धारण करना आवश्यक है।

उपर्युक्त बातें आर्य समाज को जीवन दान देने वाली हैं। अतः डॉ.वेद प्रकाश जी कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं। तथा पत्रिका में श्री अमृत खरे जी द्वारा नीरस से लगने वाले मंत्रों का सरस पद्य अनुवाद हृदय को आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। सम्भव है कि खरे साहब को यह शक्ति मंत्र द्रष्टा के रूप में ईश्वर प्रदत्त प्राप्त है। उनके पद्य पत्रिका के परम सौभाग्य के सूचक हैं। पत्रिका को उनका सहयोग चिरकाल तक प्राप्त होता रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है। आज आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह २०१४ की पावन एवं ऐतिहासिक वेला में हम आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं तथा आशा करते हैं कि आप सबका हार्दिक सहयोग और प्रेम आर्य लोक वार्ता को निरन्तर प्राप्त होत रहेगा।

आपका-

ओजोमित्र शास्त्री
व्याकरणाचार्य

दिनांक १ मार्च, २०१४

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, लखनऊ

सम्पादकीय

रविमंडल देखत लघु लागा

लोकसभा चुनाव २०१४ बड़े ही रोचक दौर में पहुँच गये हैं। एक ओर बड़ी संख्या में अपराधिक पृष्ठभूमि के बाहुबली राजनीतिक दलों का टिकट हासिल करके चुनावी दंगल में उतर चुके हैं- तो दूसरी ओर अनेक नामचीन फिल्मी हस्तियाँ भी किसी न किसी पार्टी का प्रत्याशी बनकर रूपहले पर्दे की जगह लोकसभा में जलवा दिखाने के लिए बेकरार हैं। इतना ही नहीं- नेताओं के चुनावी प्रचार में बार बालाएँ ठुमके (अश्लील नृत्य) लगा रही हैं और सभी मर्यादायें तोड़कर राजनेताओं द्वारा उन्हें अलिंगनबद्ध करने के दृश्य कैमरों में कैद हो रहे हैं। कल्पना कर सकते हैं आप- अगर लोकसभा में पहुचे नगमा, गुलपनाम, मुख्तार अंसारी, और अतीक अहमद- भारतीय संविधान की किन धाराओं की पुनर्व्याख्या अथवा संरचना करेंगे? है न यह लोकसभा के चुनावों का रोचक दौर!

रोचक इसलिए कि राष्ट्रोन्नति के सबसे प्रबल शत्रु भ्रष्टाचार और उसको संरक्षण देने वाली केन्द्रीय शासन सत्ता को पदच्युत करने के लिए जो बड़ी बड़ी तोपें बनी थीं उनका रुख अव भ्रष्टाचार के किले की ओर न होकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने वालों की तरफ मुड़ गया है। जो कल तक भ्रष्टाचार और काले धन का हल खोज रहे थे, और बच्चों की कसम खा खाकर कहते थे कि हम कभी भी कांग्रेस के साथ नहीं जायेंगे; वे ही आज कांग्रेस के साथ मिलकर भ्रष्टाचार और कालेधन को संरक्षण देने वाली केन्द्रीय सत्ता के खिलाफ उभरी हुई सबसे बुलन्द आवाज- नरेन्द्र मोदी का हल खोजने में जुट गये हैं।

चुनावों की रोचकता को कुछ और रंगीन, जायकेदार बनाने का श्रेय भारतीय जनता पार्टी के वयोवृद्ध, अनुभवसिद्ध, तजुर्बेकार, तपे तपाये बुजुर्गवार नेताओं को है। इनमें माननीय लालकृष्ण अडवाणी, जसवन्त सिंह, चिन्मयानन्द, लालमनि चौबे इत्यादि के नाम महत्वपूर्ण हैं। कहा जा रहा है कि मोदी-राजनाथ की टीम ने इन तपोनिष्ठ नेताओं की उपेक्षा की है- इन्हें हाशिये पर डाल दिया है। आडवाणी और जसवन्त सिंह, चिन्मयानन्द जैसे नेताओं का अगर पार्टी ने अपना प्रत्याशी नहीं बनाया है तो निश्चय ही यह चौंकाने वाली बात है। भाजपा हाईकमान द्वारा ऐसे माननीयों का टिकट काट देना- चौंकाने वाली बात तो है ही, उपर्युक्त नेताओं का टिकट न मिलने पर रूठना, भी कम दिलचस्प नहीं है। नब्बे की दहलीज पर कदम रखने वाले भारतीय जनसंघ और फिर भारतीय जनता पाटी के सर्वाधिक सम्मान के योग्य नेता, भारत के गृहमंत्री और फिर उप प्रधानमंत्री जैसे गरिमापूर्ण पदों को सुशोभित कर चुके आडवाणी जैसे नेता मनोवांछित सीट पर टिकट न मिलने से बच्चों की तरह गाल फुला लेना और अपने से कनिष्ठ व्यक्तियों से मान मनौव्वल कराना, भी कम रोचक नहीं है। त्याग पर आधारित एक संस्था से उपजे हुए व्यक्तियों की यह पद लिप्सा महान् व्यक्तित्वों के अधःपतन को दर्शाती है। बड़े व्यक्तियों की इन हरकतों ने जहाँ अन्य दलों को छींटाकशी करने का स्वर्ण अवसर सुलभ करा दिया है, वहाँ भाजपा के नये नेतृत्व की टिप्पणियाँ भी कम रोचक नहीं हैं। श्री अरुण जेटली ने कहा है, 'नेताओं को 'ना' स्वीकार करने की आदत भी डालनी चाहिए।' श्रीमती सुषमा स्वराज कहती हैं- 'अगर आडवाणी और जसवंत सिंह जैसे वरिष्ठ नेताओं को मनोवांछित सीट पर टिकट नहीं मिला है, तो इसके पीछे कोई कारण अवश्य ही होगा।'

कार्य कारण का अटूट संबन्ध है। बिना कारण कोई भी कार्य नहीं होता है। कार्य कारण की शृंखला की कड़ियाँ अगर जोड़ी जाँय तो यह ज्ञात होता है कि आडवाणी जी और जसवंत सिंह तथा चिन्मयानन्द इत्यादि वाजपेयी मंत्रिमंडल के महत्वपूर्ण सदस्य थे। आडवाणी जी गृहमंत्री-उपप्रधान मंत्री थे। अटल जी का आडवाणी पर भारी भरोसा था। किन्तु कांधार विमान अपहरण काण्ड में आतंकवादियों का विमान, भारत की धरती पर ईंधन (तेल) लेने के लिए उतरा और सकुशल फिर उड़ गया- उस समय गृहमंत्री जी क्या कर रहे थे! अकूल सैनिक बलों तथा भारत की तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्षों और विशाल वाहिनियों के होते हुए अपहर्तागण कैसे भारतीय नभमंडल में उड़ाने भरते रहे? यहाँ किसकी चूक मानी जायगी? निश्चय ही गृहमंत्री की सूझबूझ की विफलता ही मानी जायगी।

इस विचलित कर देने वाले विमान काण्ड में दुनिया के सबसे खूँखार आतंकवादी को जेल से रिहाकर- करोड़ों रुपयों की धनराशि के साथ अपहरणकर्ताओं के सिपुर्द किसने किया- यह महान् कार्य माननीय जसवंत सिंह के कर कमलों द्वारा हुआ! अगर उपर्युक्त अनुभवी बुजुर्गवार कद्दावर भाजपा नेता यहीं रुक गये होते तो गनीमत थी किन्तु दोनों ही अनुभवी नेताओं ने पाकिस्तान के संस्थापक और भारत माता को दो टुकड़ों में विभाजित करने वाले- कायदे आज़म की शान में कसीदे पढ़े और पूज्य आडवाणी जी तो पाकिस्तान जाकर कायदे आज़म की मज़ार पर चादर भी चढ़ाने का पुण्यलाभ कमाने से नहीं चूके। और जसवंत सिंह ने तो अपनी आत्मकथा में कायदे आज़म की प्रशस्ति में काफी स्याही खर्च की है और इस कृत्य पर माफी माँगने के स्थान पर गर्व का अनुभव किया।

संक्रान्ति के ऐसे युग में जब राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की कड़ियाँ काफी कमज़ोर हो चुकी हैं; गुजरात की उर्वर धरा ने एक दिशा प्रदान की है। जिस गुजरात में बैठकर कभी योगेश्वर कृष्ण ने महान् भारत के निर्माण का शंख फूँका था; जिस गुजरात में जन्मे वेदोद्धाकर महर्षि दयानन्द ने स्वाधीन भारत की नींव रखी थी; जिस गुजरात से उपजे महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा की वंशी बजाई थी और जिस गुजरात के सपूत वल्लभभाई पटेल ने ६५० देशी रियासतों का एकीकरण कर विशाल भारत की रूपरचना की थी; उसी गुजरात की उर्वर धरा से निकल कर कुछ रश्मियाँ भारतीय क्षितिज में अपनी स्वर्णिमा बिखेरने लगी हैं। ये रश्मियाँ अभी भले ही स्वल्प प्रतीत हो रही हों, किन्तु आशा है कि ये शीघ्र ही सूर्यप्रीाा बनकर भारत के सम्पूर्ण भाग्याकाश को आच्छादित कर लेंगी- और भारतीय आर्य संस्कृति पर आधारित भारत का अभ्युदय संभव हो सकेगा। गोस्वामी तुलसी दास के शब्दों में-

रविमण्डल देखत लघु लागा । उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३९

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

स्तुति प्रार्थना कैसी हो?

ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर उसका स्वीकार करता है कि जैसे हे परमेश्वर! आप मेरे शत्रुओं का नाश, मुझ को सबसे बड़ा, मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे अधीन सब हो जायँ इत्यादि, क्योंकि जब दोनों शत्रु एक दूसरे के नाश के लिए प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश कर दे? जो कोई कहे कि जिसका प्रेम अधिक उसकी प्रार्थना सफल हो जावे तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहिये। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा- हे परमेश्वर! आप हमको रोटी बना कर खिलाइये, मकान में झाड़ू लगाइये, वस्त्र धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कीजिये। इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते वे महामूर्ख हैं क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पायेगा। जैसे-

कुर्वुन्नेवेह कर्माणि जिजीविषे च्छत समा:॥

(यजु.४०/२)

परमेश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक जीवे तब तक कर्म करता हुआ जीने की इच्छा करे, आलसी कभी न हो।

देखो! सृष्टि के बीच में जितने प्राणी हैं अथवा अप्राणी, वे सब अपने-अपने कर्म और यत्न करते ही रहते हैं। जैसे

पिपीलिका आदि सदा प्रयत्न करते, पृथिवी आदि सदा घूमते ओर वृक्ष आदि सदा बढ़ते घटते रहते हैं वेसे यह दृष्टान्त मनुष्यों को भी ग्रहण करना योग्य है। जैसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है। जैसे काम करने वाले पुरुष को भृत्य कहते हैं और अन्य आलसी को नहीं। देखने की इच्छा करने और नेत्र वाले को दिखलाते हैं अन्धे को नहीं।

इसी प्रकार परमेश्वर भी सब के उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है हानिकारक कर्म में नहीं। जो कोई गुड़ मीठा है ऐसा कहता है उसको गुड़ प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता है।

अब तीसरी उपासना-

समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत्। न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्त:करणेन गृह्यते॥

यह उपनिषद् का वचन है-जिस पुरुष के अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिसने लगाया है उसको जो परमात्मा के योग्य का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है।

(क्रमशः)

वेदांजलि

क्रान्तिदर्शी ही कालरूपी घोड़े पर चढ़ सकते हैं

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि: सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेता:।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥

–*अथर्व. 19/53/1*

शब्दार्थ-

(**सप्तरश्मि:**) सात रस्सियों वाला (**सहस्त्राक्ष:**) हजारों धुरों को चलाने वाला (**अजर:**) कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होनेवाला (**भूरिरेता:**) महाबली (**काल: अश्व:**) समयरूपी घोड़ा (**वहति**) चल रहा है- संसार-रथ को खींच रहा है। (**विश्वा भुवनानि**) सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन (**तस्य**) उसके (**चक्रा:**) उसके द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। (**तम्**) उस घोड़े पर (**विपश्चित:**) ज्ञानी और (**कवय:**) क्रान्तदर्शी लोग ही (**आरोहन्ति**) सवार होते हैं।

व्याख्या-

मंत्र में मुख्य रूप से दो बातें कही गई हैं- पहली यह कि सम्पूर्ण भुवनचक्र को घुमानेवाला महाबली और कभी वृद्ध होकर मन्दगति न होनेवाला समयरूपी घोड़ा पूरे वेग से दौड़ रहा है। दूसरी यह कि इस महाबली और वेगवान् कालरूपी घोड़े पर ज्ञानी और दूरदर्शी लोग ही सवार होकर अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं, अल्पसामर्थ्य और अदूरदर्शी नहीं। इस मंत्र में सफलतापूर्वक जीन का रहस्य बताया गया है। जो संसार में जातियों और राष्ट्रों के उत्थान और पतन के लम्बे इतिहास पर गुण-दोषों का विवेचन करके चलते हैं, वहीं इस घोड़े पर सवार होते हैं। ऐसे लोग वर्तमान में सुख-सुविधा प्राप्त करते हुए अपने भविष्य का निर्माण करते हैं यही बात प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने इन शब्दों में लिखी है-

"Nations live on their past, in their present, for their future."

'जातियाँ भूत के आधार पर वर्तमान में भविष्य के लिए जीती हैं।'

वेद ने कालरूपी घोड़े के योग्य सवार बनने के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम ज्ञानी बनने का-'**भानुमन्विहि**'(ऋ.) परामर्श दिया है, संयम और तप का उपदेश दिया है-'**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत**'(अथर्व.), '**तेन त्यक्तेन भुंजीथा:**'(यजु.) कहकर त्यागभाव से संसार को भोगने का उपदेश दिया है। ये सभी उपदेश मनुष्य को सोच समझ कर मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए दिये गए हैं। समाज में इस वायुमण्डल के तैयार होने पर वही दृश्य उपस्थित हो जाएगा, जिसकी झाँकी महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या का वर्णन करते हुए की है।

राम ने राजतिलक की तैयारी होते होते अप्रत्याशित रूप से उपस्थित वनवास के प्रस्ताव को सहज भाव से अंगीकार किया। इसके मार्ग में बाधक बननेवाले लक्ष्मण को भी बड़े चातुर्य से शान्त किया। इन सभी आचरणों से राम की दूरदर्शिता और व्यवहार-कौशल का पता चलता है।

उधर ननसाल लौटने पर भरत ने परिस्थिति का अध्ययन करके अपने राज्याधिकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और राम को वापस लाने के लिए मंत्रि-मण्डल, अयोध्या के चुनिंदा लोगों और तीनों माताओं को साथ लेकर प्रस्थान किया।

राम ने अनेक युक्ति-प्रतियुक्तियों के पश्चात् कहा कि जो पिता अपने वचन का पालन करने के लिए इस संसार से चला गया, उसका पुत्र मैं यदि १४ वर्ष बिना पूरे किये लौट जाऊँ तो '**कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्य: पुत्रिण: स्पृहाम्**'-तो संसार के पिता अपने पुत्रों से यह आशा कैसे कर सकेंगे कि उनके पुत्र आगे संसार में उनकी लीक पर चलकर उनके प्रण निभाएँ?

इस सारे कथा-प्रसंग के उद्धत करने का यही उद्देश्य है कि भरत और राम दोनो का दृष्टिकोण दूरदर्शिता और औदार्य से पूर्ण था। परिणामस्वरूप कुत्सित स्वार्थ और संकीर्ण दृष्टि से जो कटुता उत्पन्न हुई थी, उसका भी पर्यवसान स्नेह और आत्मीयता में हो गया। भारत के इतिहास में भरत और राम ने परम ख्याति अर्जित की और हमारे मानसभवनों में वे आज भी जीवित-जागृत हैं, अमर हैं। इसी को कहते हैं समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

कृष्ण ने अपनी प्रबल नीति से अपने चिर-वैरी और अतिबली शत्रु को उसके घर में घुसकर बिना सैनिक-क्षति किये हुए समाप्त कर दिया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहयोग के लिए सैकड़ों राजा जुटा दिये। इस सूझबूझ के साथ संसार में चलने को ही कहते हैं-समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने जो प्रशस्ति पत्र कृष्ण को दिया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। महर्षि ने लिखा है कि-'महाभारत में वर्णित कृष्ण के चरित्र को देखने से विदित होता है कि इस महापुरुष ने यावज्जीवन कोई पाप नहीं किया।'

अतएव मंत्र में कहा गया है कि-'**तमारोहन्ति कवयो विपश्चित:**'-इस कालरूपी अश्व पर सवारी करने का अधिकार विद्वान् और क्रान्तिदर्शियों को ही है।

अत: प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सावधान होकर दूरदर्शिता से देश के गौरव और सम्मान की सुरक्षा के लिए तुच्छ स्वार्थों की आहुति देनी चाहिए और अच्छे संयमी और तपस्वी व्यक्तियों के हाथ में ही देश का भविष्य सौंपना चाहिए। अन्यथा जो परिणाम होगा, वह एक उर्दू शायर के शब्दों में पढ़िये-

मैं ही रुका न वक्त की रफ़्तार देखकर,
कहता रहा वो मुझसे ख़बरदार! देखकर।
यूँ पढ़के उसने एक तरफ़ रख दिया मुझे,
जिस तरह फेंक दे कोई अख़बार देखकर।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

धारावाहिक-(42)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

५-परमार्थ की सिद्धि

(क) दान-परोपकार-विषयक कुछ अन्य बातों का निर्देश करके हम इस प्रसंग को समाप्त करेंगे। पहली बात तो यह है कि किसी भी प्रकार का स्वार्थ परमार्थ को निष्फल बना देता है। कर्त्तव्यबुद्धि से किया हुआ उपकार ही सफल होता है। सरकार या किसी संस्था का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए चन्दा देना या दौड़धूप करना, नाम कमाने के लिए दिखावटी दान-पुण्य करना अथवा आतंकित होकर देना परमार्थ नहीं कहा जायगा। ऐसे लोगों को जो स्वार्थसिद्धि के लिए थोड़ा बहुत दान-परोपकार करते हैं, दानी-पुण्यात्मा नहीं, धर्मवैतंसिक कहा जाता है। वे तो धर्म का व्यवसाय करते हैं, धर्म के नाम से कमाते हैं, पुण्य का पर्दा टाँगकर पाप करते हैं। पैसे लेकर आशीर्वाद देने वाले महंत-पुजारी, दानी नहीं कहे जा सकते। सभ्य-समाज की दृष्टि में वे पाखंडी होते हैं।

किसी से प्रत्युपकार की आशा से उपकार करना भी श्रेयस्कर नहीं माना जाता। पुराण का मत है कि जो निष्काम भाव से किसी का उपकार करता है, वहीं साधु कहलाता है; जो किसी वस्तु की इच्छा से उपकार करता है, उसकी साधुता में कौन गुण है- वह निरर्थक है-

उपकुर्यान्निराकाङ्क्षो यः स साधुरितीर्यते।
साकांक्षमुपकुर्याद्यः साधुत्वे तस्य को गुणः।।

-स्कन्दपुराण

(ख) अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तुओं से अपना पिंड छुड़ाने के लिए दान देना भी व्यर्थ होता है। पुराणों में वाजिश्रवा नामक एक ऋषि की कथा है। उसके पास बहुत-सी गायें थीं। जबतक वे दूध देती रहीं, वाजिश्रवा दूध से पुष्ट होते रहे और उनका पालन भी श्रमपूर्वक करते रहे। बूढ़ी होने पर वे ऋषि के लिए भार-स्वरूप हो गईं। ऋषि ने एक तरकीब निकाली। उन्होंने चेलों से घोषणा करवा दी कि अमुक तिथि को महात्मा जी गोदान करेंगे। उस तिथि को बहुत-से ब्राह्मण मंगलोच्चार करते हुए ऋषि के आश्रम पर पधारे। ऋषि ने सबको एक एक गाय प्रदान करके अपनी उदारता का विज्ञापन किया। ब्राह्मण लोग अपनी-अपनी गायें लेकर चले गये। ऋषि को उस दिन बड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि एक तो सिर से बला टली, दूसरे दानियों में नाम हुआ। 'मरी बछिया बाम्हन के नाम' इसी को कहते हैं। इस प्रकार के परोपकार से न तो दूसरों का कल्याण होता है और न सुयश ही मिलता है। वाजिश्रवा की गायें याचक के किस काम आयी होंगी! लेने वालों ने उसे परोपकारी नहीं, उलटे धूर्त ही समझा होगा।

परमार्थ के काम में अपनी सुविधा की अपेक्षा दूसरे की सुविधा का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। जिसे जिस प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, उसे यथाशक्ति उसी प्रकार सहायता देना सच्चा परोपकार है। गंजे को कंघी देने में क्या लाभ! दान से मुख्यतः दुसरों की कामना-पूर्ति होनी चाहिये। भगवान् कृष्ण ने कहा-

दरिद्रान् भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।
व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य किमौषधम्।।

आजकल तो लोग कन्या-दान भी उचित रीति से नहीं करते। कन्यादान के नाम से वस्तुतः अपने घर का बोझ उतारते हैं। यह नीति अपने लिए और समाज के लिए अहितकर है।

(ग) समय पर सदुद्देश्य के साथ सुपात्र को दिया हुआ सात्त्विक दान वरदान हो जाता है। समय का ध्यान इसलिए रखना चाहिए कि 'का वर्षा जब कृषि सुखाने'। जिसे आज अपना शरीर ढँकने के लिए कपड़ा चाहिए, उसे आप यह आश्वासन देकर सन्तुष्ट नहीं कर सकते कि मरने पर हम तुम्हें कफन देंगे। किसी के लिए मरने पर गोदान देने से यह अच्छा है कि उसे जीते-जी गाय दी जाय जिससे वह उसका उपयोग भी कर सके। अंग्रेजी में कहावत है-'Liberality does not consist in giving much, but in giving at the right moment.' इसका अर्थ यह है कि बहुत अधिक देने से उदारता सिद्ध नहीं होती; आवश्यकता के समय सहायता देना ही उदारता है।

सदुद्देश्य का ध्यान इसलिए आवश्यक है कि दान से पापों की वृद्धि नहीं होनी चाहिए। उससे यदि कोई अनुचित कार्य होता है तो वरदान अपने लिए ही शाप हो जाता है। जिससे अधिकाधिक लोगों का अधिकाधिक हित हो, वही श्रेष्ठ दान है।

सुपात्र का ध्यान रखना परमावश्यक है। जिस प्रकार वर्षा का प्रभाव समुद्र में नहीं, ताल-तलैयों और खेतों में ही देखा जाता है, उसी प्रकार दान का प्रभाव दीनों में। समर्थ दुर्जनों को दान देना वैसा ही है जैसे डाकू को अपना हथियार देना। लोभी तो सदा दीन ही बना रहता है; उसे सुपात्र मानने में भूल हो सकती है। सुपात्र वह है जो शारीरिक, आर्थिक अथवा सामाजिक दुर्बलताओं के कारण असमर्थ हो, पतित हो, बन्धनग्रस्त हो। उसीको शक्ति प्रदान करना, उठाना, मुक्त बनाना परोपकार कह जायगा। निर्बल, अनाथ और रोगी दान के पात्र होते हैं।

ऐसे व्यक्तियों को सत्प्रयोजन से शुद्ध पैसों की सहायता देनी चाहिए। शुद्ध पैसों का अर्थ है अपनी न्यायोपार्जित कमाई। ऐसी कमाई को लोकोपयोगी कामों में लगाना सच्चा दान है। किसी दशा में भी अपना रोग-द्वेष नहीं बाँटना चाहिए। अन्हें तो न देना ही परोपकार है। धोखा देने या गाली देने से तो अपना और लोक का अपकार ही होता है।

(घ) सात्त्विक दान सहज भाव से सम्मानपूर्वक दिया जाता है। माँगने पर तिरस्कार के साथ देने से उसकी महिमा घट जाती है। उसका उद्देश्य दूसरों को ऊँचा उठाना है, अतएव किसी को नीचा या पतित बनाकर कुछ देना या कुछ सहायता करना अनुचित है। स्वेच्छापूर्वक सत्कार के साथ देने से साधारण वस्तु भी असाधारण बन जाती है। मान का पान भी हीरे के समान होता है। गुप्तदान का महत्त्व इसीलिए है कि उससे लेने वाले को अपमानित नहीं होना पड़ता और दाता का अहंकार नहीं प्रकट होता। अहंकार से पुण्य नष्ट हो जाता है।

शास्त्र में सत्पुरुष के ये लक्षण बताए गए हैं-'उदार होकर प्रियवक्ता हो, शूर होकर जल्पक न हो, दाता होकर अपात्र पर धनवर्षा न करे, निष्ठुर हुए बिना प्रगल्भ होना चाहिए'-

प्रियं ब्रूयादकृपणः शूरः स्यादविकत्थनः।
दाता नापात्रवर्षी च प्रगल्भः स्यादनिष्ठुरः।।

-हितोपदेश

इन बातों को ध्यान में रखकर प्रत्येक व्यक्ति को लोक-सेवा, दान, परोपकार में प्रवृत्त होना चाहिए। इसीमें जीवन की सार्थकता हैं रहीम के शब्दों में-

तबही लगि जीवो भलो, दीबो परै न धीम।
बिन दीबो जीबो जगत, हमहिं न रुचै रहीम।।

लोकहित के लिए स्वार्थ-त्याग- यही हमारी सभ्यता का सनातन आदर्श है। यही तपस्या है। यही सर्वोदय का मूलमंत्र है। और यही अमरता का महायज्ञ है। 'अंगराज' के शब्दों में-

परहित करना आत्म-त्याग है
आर्य-जनों की रीति सनातन।
इस नश्वर जगमें मर कर भी,
रहते अमर इसी विध सज्जन।।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (2)

अनन्त की खोज

-आनन्द गिरि-

महाभारत की घटना है। कुरुक्षेत्र में कौरव पाण्डवों की सेना एक दूसरे के सन्मुख व्यूह रचकर खड़ी है। युद्ध प्रारम्भ होने वाला है। विभिन्न रथी महारथी अपने-अपने शंख बजाकर सैनिकों में उत्तेजना भर रहे हैं। अर्जुन ने अपने सखा सारथी कृष्ण को दोनों सेनाओं के मध्य में रथ खड़ा करने के लिए कहा। वह जानना चाहता था कि कौन-कौन महारथी पक्ष-विपक्ष में हैं। महाभारत की यह कथा बताती है कि अर्जुन ने जब दोनों पक्षों को देखा तो विषाद में डूब गया। अप्रतिम योद्धा, युग का महाबली, धनुर्धर अर्जुन घबरा गया, उसके शरीर से पसीना छूट पड़ा। अर्जुन की स्थिति का गीता बड़ा सजीव चित्रण करती है।

दृष्ट्वेवं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परि शुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते
गाण्डीवं संश्रते हस्तात् त्वक् चैव परिदह्यते
न च शम्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।

अथक परिश्रम करके अर्जुन ने युद्ध की तैयारी की थी। उसने पाशुपत अस्त्र को पाने के लिए कठोर तप किया था। युद्ध करके किरात वेशी शिव को प्रसन्न किया था। सामरिक तैयारी के लिए कुबेर से ऋण लिया था। वह वीर पुरुष, युद्ध जिसका स्वभाव था, विचलित हो उठा। उसने कहा- हे कृष्ण! राज्य सुख की तो बात ही क्या है इस दृश्य को देखकर मुझे जीवन की आशा ही निरर्थक लगती है। अपने जनों को मारकर भूमि का राज्य तो क्या मुझे त्रैलोक्य के राज्य की भी आकांक्षा नहीं है। मैं भिक्षा मांग लूंगा किन्तु युद्धरूपी इस पाप कर्म में प्रवृत्त नहीं हो सकता।

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि न।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा।।
एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्य राज्यस्य हेतोः किं न महीकृते।।

अर्जुन बुद्धिमान है। तर्कों का प्रयोग करना जानता है। युद्ध के अनौचित्य को तर्क की भाषा में प्रस्तुत करता है। युद्ध कुलक्षय करेगा। कुल धर्म, वर्ण धर्म, नष्ट हो जाएगा। मर्यादा लुप्त होकर समाज में अव्यवस्था फैलेगी। अर्जुन प्रबल नैतिक तर्क देता है कि पूज्यों को मारने से हिंसा का पाप होगा। यद्यपि वह तर्क बुद्धि से युद्ध के अनौचित्य को सिद्ध कर रहा है, किन्तु उसके अंतरंग का एक भाग ऐसा भी है जो स्वयं तर्क से संतुष्ट नहीं है। विवेक के किसी बिन्दु पर वह तर्क और युक्ति को निस्सार पाता है। आखिर उसे कहना पड़ा कि-

कार्यण्य दोषोऽपहत स्वभावः
प्रच्छामि त्वां धर्म संमूढ़ चेतः।

'मेरा स्वभाव अर्थात् स्वरूप हत हो गया है, बिगड़ गया है कृपा का सद्‌गुण विकृत होकर कार्यण्य दोष बन गया है। मैं कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ।' इस प्रकार अर्जुन अपने मित्र कृष्ण से बोले! वस्तुतः वीर अर्जुन को ऐन युद्ध के अवसर पर कायर बनाने वाली, क्षत्रिय को को भिक्षा मांग कर जी लेने तक गिरा देने वाली शक्ति न तो कौरवों की सामरिक तैय्यारी थी और न व्यूह रचना। जिसने अर्जुन को कायर बना दिया था वह थी आत्म विस्मृति। अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में सम्पूर्ण कुल को देखा। उसे रिश्ते सम्बन्धों की सुध हो आयी, रिश्ते और नाते जो वस्तुतः क्षणिक हैं। उसने क्षणिक सम्बन्धों को शाश्वत और परम सत्य समझ लिया। अनित्य एवं क्षणिक व्यक्तित्व को यथार्थ मान लेने से वह आत्म विस्मृति के अज्ञान में गिर पड़ा। अर्जुन इस बात को भूल गया कि इन सम्बन्धों के दायरे से परे भी व्यक्तित्व का एक ऐसा अंश है जो पूर्ण स्वतंत्र और एकान्तिक है। गीतोपदेश का मुख्य उद्देश यही है कि अर्जुन को यह ज्ञान कराया जाय कि वस्तुतः वह क्या है? और जो युद्ध के लिए उपस्थित हो उनसे उसका क्या सम्बन्ध है? सखा, सारथी, गुरु, कृष्ण अपना उपदेश सांख्य योग से प्रारम्भ करते हैं। वह अर्जुन को आत्मा और प्रकृति का उपदेश करते हैं और दोनों के स्वभाव एवं पारस्परिक संबन्ध को बताते हैं। प्रकृति की परिणाम-शीलता, शरीर की नश्वरता तथा शरीर की अनश्वरता का बोध गीता का दूसरा अध्याय है। अर्जुन शरीर बनकर सोच रहा था। उसने अपने भौतिक रूप को ही सत्य समझ लिया था। जबकि यह शरीर बाद में था पहले आत्म तत्व था। ऐसा आत्म तत्व जो कि अपनी सत्ता में अजर अमर अविनाशी है। इसलिए न किसी का पुत्र है और न किसी का पिता। अर्जुन इस तथ्य को भी भूल गया था कि नाते रिश्तों से पहले वह वस्तुतः क्षत्रिय है। उसका क्षत्रियत्व जन्म से नहीं प्रकृति से है, जो गुण कर्म स्वभाव की रचना करती है। नाते रिश्ते बाहरी हैं बनाए हुए हैं, उनकी पकड़ इतनी गहरी नहीं हे कि वे प्रकृति के गुणों को बदल सकें। अतः कृष्ण कहते हैं कि उसे युद्ध के विषय में रिश्ते नातों से परे क्षत्रियत्व के धरातल पर सोचना चाहिए। क्षत्रिय का धर्म युद्ध करना है और युद्ध का धर्म है कि वह दैवी सम्पदा का संवर्द्धन करे। अस्तु अर्जुन को गीता प्रत्येक दृष्टि से ध्यान कराती है कि उसका मोह और अज्ञान आत्म विस्मृति के कारण है। गीता के अन्तिम अध्याय में अर्जुन कहता है कि इस उपदेश से मेरा मोह नष्ट हो गया है और मुझे स्मृति उपलब्ध हो गई है। अब मैं आपकी आज्ञानुसार आचयरण करूँगा- 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धः'। स्मृतिर्लब्ध से तात्पर्य यह है कि गीतोपदेश से अर्जुन को बोध हो गया कि वह पहले पुरुष तत्व है फिर क्षत्रिय है। उसका भौतिक रूप जो सम्बन्धों और रिश्ते के दायरे में कैद है गौर और नश्वर है। आत्म स्मृति होते ही अर्जुन का विषाद दौर्बल्य दूर हो गया और वह अपने वीर रूप में आ गया।

मेरे मित्रो, व्यक्ति से समाज बनता है। समाज कोई स्थूल सत्ता नहीं है अपितु एक बौद्धिक धारणा है। जिसका आधार संस्कृति होती है। जब व्यक्ति आत्मविस्मृति के गर्त में गिरता है, उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है, और जब बहुसंख्या में लोग इस विस्मृति को प्राप्त होते हैं तब सामाजिक जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।

सम्पूर्ण समाज आत्म विस्मृत हो जाता है। सामाजिक आत्मविस्मृति का अर्थ है, सांस्कृतिक धरातल से गिर जाना। संस्कृति कल्पना नहीं है और न कोई भाव प्रवणता। संस्कृति आत्मा के समान दिव्य है और जीवन की समग्रता की अवधारणा है। सभ्यता जीवन में संस्कृति को चरितार्थ करने की पद्धति है। सभ्यता जीवन को संस्कृति से जोड़ती है। परिणामस्वरूप जीवन सुन्दर और दिव्य होता है। और जब सभ्यता संस्कृति से टूट जाती है तब रूढ़िवादिता जन्म लेती है। समाज की गत्यात्मकता और परिवर्तनशीलता समाप्त हो जाती है। परिवर्तन शीलता से हमारा तात्पर्य उस शक्ति से है जो परिवेश और परिस्थिति के अनुकूल अस्तित्व के लिए समाज को बदला करती है। इस ग्रहणात्मक शक्ति के कुंठित हो जाने पर समाज जड़ हो जाता है। आज का हमारा समाज ऐसा ही है। इस सम्बन्ध में मुझे एक घटना स्मरण हो आयी। मेरे एक परिचित को व्यापार मण्डल का सदस्य बनकर विदेश जाने का अवसर मिला। वहां रात्रि भोज में उपस्थित एक महिला ने बातचीत में उनसे एक प्रश्न किया। प्रश्न था कि जिस देश के पास गीता उपनिषद् जैसे आत्मज्ञान के ग्रन्थ हैं वह विदेशियों की गुलामी में कैसे आया? 'क्या उत्तर दिया आपने?' मैंने पूछा तो वह बोले कि उन्होंने कभी इस पर विचार ही नहीं किया अस्तु कोई उत्तर न दे सके।

मित्रों, आप भी सोचें इस प्रश्न का क्या उत्तर हो सकता है? इसका केवल एक ही उत्तर है कि हिन्दू सभ्यता संस्कृति से कट गयी थी। फलस्वरूप रूढ़िवाद और जड़ता ने सारे जलवन को जकड़ लिया। महाभारत युद्ध के पश्चात् से अन्धविश्वास और जड़ता का जो 'ग्रहण' इस देश को लगा वह आज तक नहीं उतर सका है। इस समाज ने आज तक इतिहास से कुछ नहीं सीखा है। हमारे पराभव और दुर्भाग्य का करण रूढ़िवाद था जो आज तक केवल सुरक्षित ही नहीं है, अपितु पहले से भी अधिक प्रभावशाली और व्यापक है। विदेशी आक्रमण से सुरक्षा के लिए सारा देश मुट्ठी भर क्षत्रियों पर आश्रित था और क्षत्रियत्व का आधार जन्म था न कि स्वभाव और कर्म। जातिवाद की रूढ़ि में ग्रसित राजपूत किसी अन्य जाति के व्यक्ति को सेनापतित्व स्वीकार नहीं करते थे। चाहे वह व्यक्ति कितना ही वीर और योग्य क्यों न हो। जातिवाद ने राष्ट्र को योग्य व्यक्तियों का लाभ न लेने दिया। देश रक्षा का कार्य केवल राजपूत क्षत्रियों का धर्म है यह एक मान्यता बन गयी। संकट में सारा राष्ट्र शस्त्र सज्जित होना चाहिए था यह कल्पना में भी नहीं रहा। इस जड़ता ने राष्ट्र में वीरता और देशप्रेम की भावना को पनपने का अवसर ही नहीं दिया। मुट्ठी भर राजपूत सेना के परास्त होने से लाख-लाख नागरिकों के जनपद सरलता से विदेशी सत्ता स्वीकार कर लेते थे। क्षत्रियत्व वर्ण धर्म था। वर्ण अर्थात् जो वरण किया गया है। *(क्रमशः)*

शुभाकांक्षा

हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'यज्ञ' की परम्परा प्रारम्भ की थी। कार्यक्रम प्रारम्भ होने के पहले दूषित वातावरणको ध्यान रखकर पूर्व में यज्ञ का प्राविधान रखा। जिसके शुद्ध रखने का दायित्व मनुष्य का है। मेरे ५०वीं वैवाहिक वर्षगाँठ समारोह में आप द्वारा सम्पन्न कराया 'यज्ञ' मेरे एवं परिवार के लिये चिरस्मरणीय रहेगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम सुन्दर-रूप से प्रारम्भ होकर शान्तिपूर्ण समाप्त हुआ।

आपको-

उपमा की उपमा कह दूँ
या हृदय से उपमान कहूँ
इस उत्सव का भान कहूँ
या 'यज्ञ' परम्परा का सम्मान कहूँ!

-भूपेन्द्र नाथ मेहरोत्रा

मेहरोत्रा फिलिंग स्टेशन, टाँडा-२२४१९०

***

जनवरी मास की पत्रिका 'आर्य लोक वार्ता' हस्तगत हुई। 'आर्य संदेश' से संकलित डॉ.विवेक आर्य का लेख 'अब्दुल्लाह गांधी का हुआ धर्म परिवर्तन से मोह भंग, शुद्ध होकर फिर बने हीरा लाल गांधी' पढ़कर काफी प्रभावित हुआ। माता कस्तूरबा का अपने पुत्र हीरालाल के नाम लिखा गया पत्र कितना मार्मिक है, हृदय को छूता चला जाता है।

इस लेख से कई संदेश भी मिलते हैं। धर्म परिवर्तित कराने वाले हीरालाल से बने अब्दुल्लाह को मन्दिर पर चोट करने के लिए कैसा उकसा रहे हैं। वे चाहते हैं कि बेटे के मोह में आकर माँ कस्तूरबा और उनके पिता महात्मा गांधी जी भी धर्म परिवर्तित कर लें। अंत में हीरालाल को अपनी गलती महसूस हुई और पुनः अपने धर्म में वे लौट आये। आर्य समाज के आलोचक होते हुए भी महात्मा गांधी जी को सहारा तो इस कार्य में आर्य समाज ने ही दिया।

पद्मश्री गोपाल दास नीरज द्वारा रचित कालजयी काव्य 'इस तरह तय हुआ सांस का यह सफर, ज़िन्दगी थक गई मौत चलती रही' एक दार्शनिक एवं यथार्थ स्थिति को दर्शाने वाली कविता है। सम्पादकीय लेख पढ़कर मुझे 'आर्य लोक वार्ता' के अस्तित्व में आने वाली तीन सूत्रीय वार्ता प्रथम पाल प्रवीण, द्वितीय श्रीमती कमल अग्रवाल व तृतीय मधु बत्रा का उल्लेख भी बहुत रोचक प्रतीत हुआ। किन्तु दूसरे सूत्र श्रीमती कमल अग्रवाल का अपने बीच से उठ जाने का दुःख अवश्य है। अन्त में मैं कामना करता हूँ कि प्रस्तुत मासिक पत्रिका विद्वान डॉ.वेद प्रकाश आर्य के हाथों में प्रकाश-स्तम्भ की तरह निरन्तर प्रगति के सोपान पर अग्रसर रहे।

-प्रेमचन्द गुप्त

नालन्दा कालोनी, मवाना, मेरठ

***

'आर्य लोक वार्ता' के फरवरी, २०१४ अंक में सरदार पटेल जी द्वारा आर्य समाज के मंच से दिनांक ११ नवम्बर, १९५० को दिये गये व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करके आपने स्तुत्य कार्य किया है। उनका यह व्याख्यान अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक है। उन्होंने अपनी आश्चर्यभूत दूरदर्शिता के प्रताप से चीन की ओर से आने वाले

ख़तरों से आज़ादी की ताज़ा हवा में साँस लेने वाले भारत को बखूबी सचेत कर दिया था और अंततः भारत को चीन के आक्रमण से दोचार होना ही पड़ा। अंतिम प्रस्तर में कहा गया है कि 'भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया है।' वस्तुतः हिन्दी को राजभाष (के रूप में स्वीकारा गया है और इसे राष्ट्रभाषा बनना अभी भी शेष है। श्री आनन्द गिरि की नवीन व्याख्यान माला 'अनन्त की खोज' सारगर्भित एवं प्रेरक है। 'अक्षर लोक' की संक्षिप्त समीक्षाएँ भी स्तरीय एवं सटीक हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत जयशंकर 'प्रसाद' जी तथा गोपाल सिंह नेपाली की रचनाएँ विशेष यप से पसन्द आईं।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

जी-०२, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

मुम्बई में लम्बे प्रवास के बाद जनवरी २०१४ में लखनऊ वापिस आने पर आर्य लोक वार्ता के मास नवम्बर, दिसम्बर एवं जनवरी के ३ अंक एक साथ प्राप्त हुए। पूर्व के अंकों की भांति सभी अंकों में मुख्य पृष्ठ से लेकर अन्त के पृष्ठों तक खोजपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं, सम्पादकीय लेखों, कविताएं व अन्य स्वाध्यायपरक स्तम्भों को पढ़कर अत्यन्त हर्ष एवं संतोष हुआ। आर्य लोक वार्ता के इन ८ पृष्ठों में इतनी महत्त्वपूर्ण पाठ्य सामग्री को एकत्रित करके संवार सजाकर प्रस्तुत करना कितना बड़ा कार्य है इसका अनुमान लगाना कठिन है। इस महान कार्य के लिए आदरणीय डॉ. वेद प्रकाश आर्य एवं उनके स्वाध्यायशील सहयोगियों की पूरी टीम आलोक वीर आर्य, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', श्रीमती सरला आर्य, अमृत खरे, पाल प्रवीण, काव्यायन खण्ड में कविताएं प्रस्तुत करने वाले अन्य सभी कवि महानुभाव बहुत-बहुत धन्यवाद एवं साधुवाद के पात्र हैं। उर्दूदान हिन्दी प्रेमी डा.मिर्ज़ा हसन नासिर की कविताएं 'बेटियाँ', 'शुभ हो नूतन वर्ष', 'प्रेम सौरभ' बहुत प्यारी लगीं। उनको भी शुभकामनाएं।

-जगदीशलाल खत्री

'ध्रुव', ५००-हिन्द नगर, कानपुर मार्ग, लखनऊ

***

फरवरी २०१४ की आर्य लोक वार्ता के सभी भाग प्रभावशाली हैं। इसे देश के सभी सदस्यों को पढ़ना चाहिए और इसका असर इतना होगा कि नेता अधिकारी व मंत्री अपनी सीमा में रहकर काम करेंगे व बदमाश और लुटेरे अपने आप समाप्त हो जायेंगे। सम्पादकीय तो इतना प्रभावशाली है कि मैं भावुक हुए बिना नहीं रह सका। इसके प्रधान सम्पादक को शुभकामनाएँ, भगवान आपको और शक्ति व सामर्थ्य दे कि आपकी लेखनी चलती रहे। सचमुच आज देश सभी अपराधियों को तुरन्त कठोर दण्ड देने के पक्ष में है। इसे व्यर्थ में राजनीति के लिए लटकाना नहीं चाहिए। आखिर कसाब व अफजल गुरू की सज़ा में देरी क्यों हुई? यदि राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, प्रधानमंत्री या गृहमंत्री जो भी इसे लटकाने में भागीदार हैं उनकी जवाबदेही बनती है। क्योंकि यह बराबर बताया जाता रहा कि ये राष्ट्रपति के यहां क्रम से हो रहा है।

जबकि यह गृहमंत्री के पास ही पड़ा रहा। ऐसे ही कितने घोटाले हुए लेकिन मंत्री व बड़े अधिकारी बचे रहते हैं क्योंकि बीच के अधिकारियों की हत्या करा दी जाती है कि सुबूत खतम हो जाय। वैसे भी पुलिस, सी.बी.आई. जिसे चाहे बचा लेती है। आरूषि हत्याकांड में बेटी की लाश पड़ी रही और मां-बाप का ध्यान सिर्फ सुबूत मिटाने में लगा रहा। पुलिस, सी.बी.आई. गोलमोल कार्यवाही करके किनारे हो गयी कि सुबूत नहीं है। पुलिस चाहती तो सुबूत मिटाने पर ही केस कर अपराधी को पकड़ा जा सकता था। सबसे बड़ी बात बताना चाहता हूं कि कोई निर्णय जब सरकार के पक्ष में होता है तो उस संस्था की प्रशंसा करते हैं और जब विपरीत होता है तो वही लोग यहां तक कि प्रधानमंत्री डा.मनमोहन सिंह नसीहत देते हैं 'कोर्ट अपनी हद में रहे', 'कैग अपनी हद में रहे।'

तो फिर ऐसे सरकार से क्या उम्मीद की जा सकती है? अतः ऐसे लेख, पत्र व पत्रिका के द्वारा ही जागरण होगा जो देश में क्रांति ला सकता है। दयानन्द सरस्वती ने बड़े अधिकारियों, मंत्रियों व राजा को साधारण मानव से सहस्र गुणा दण्ड बताया है। परन्तु ये लोग दण्डित होन से बचे रहेते हैं, क्या कारण है? अब जनता को ही दण्ड देना होगा। स्वयं संगठित होकर ऐसों की कुर्सी खींचनी होगी।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव

सी ३३५/२, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

आपका पत्र निरन्तर मिल रहा है। विलम्ब होने पर बेचैनी होती है कि कुछ अच्छा पढ़ने को नहीं मिला। तभी डाक से नमूदार हो जाता है। पत्र की रोचकता एवं आवश्यकता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि ये उसी रात, एक ही सिटिंग में पूरा का पूरा अण्डर लाइन करते हुए पढ़ लिया जाता है और मेरे संकलन के खाने में सुव्यवस्थित स्थान पा जाता है।

पत्र से मेरा परिचय तीन वर्ष पूर्व श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' जी ने करवाया तब से ऐसा चस्का लगा कि ये मेरी आवश्यक पत्रिकाओं में स्थान पा गया। इस पत्र के बारे में मेरे समधी डॉ.भानु प्रकाश आर्य जी से भी चर्चा होती रहती है जो राजाजीपुरम (लखनऊ) में रहते हैं और आर्य समाज संगठन के एक निष्ठावान पदाधिकारी हैं। सीतापुर में श्री वीरजी एवं नेतराम आर्य से सम्पर्क बना रहता है तथा जानकारियां मिलती रहती हैं।

आपके इस प्रशंसनीय प्रकाशन के अन्तर्गत स्तम्भ 'सम्पादकीय', 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता', 'सत्संग', 'वाचनालय से', 'अक्षर लोक' और व्याख्यानमाला 'अनन्त की खोज' अद्वितीय हैं। 'काव्यायन' तो मेरा प्रिय स्तम्भ है। जिसमें हमारे कवि मित्रों से मुलाकात होती रहती है। डॉ. मिर्ज़ा हसन नासिर साहब के सीतापुर आगमन पर अच्छा समागम रहा। इस बार गोपाल सिंह नेपाली की सशक्त रचना हृदय को स्पर्श कर गई। बधाई स्वीकारें।

-इं. गोपाल 'सागर'

३४, अयोध्या निवास, रामनगर, सीतापुर

***

फरवरी २०१४ अंक में श्री जय प्रकाश शुक्ल की रचना पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई।

हरिद्वार में निवास कर रहे श्री चन्द्र-प्रकाश शुक्ल और प्रेम प्रकाश शुक्ल से पहले से ही परिचित था। इस बार जयप्रकाश शुक्ल का नाम तथा उनकी कविता पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। यथासंभव आपके चौथे भांजे भी हैं, जो वहीं आशियाना में ही रहते हैं। संभव है तो उनका पता भी बताने का कष्ट करें।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'

अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

[जयप्रकाश शुक्ल की इससे पहले भी कविताएँ 'आर्य लोक वार्ता' में छप चुकी हैं। वे अच्छे कवि हैं और सभी भाइयों में ज्येष्ठ हैं। चतुर्थ श्री इन्दु प्रकाश शुक्ल हैं- वे भी आशियाना में ही रहते हैं। -सं]

***

'आर्य लोक वार्ता' फरवरी अंक में लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन के कुछ स्वर्णिम पृष्ठों ने चिन्तन प्रदान कर धन्य कर दिया। महात्मा गांधी से कम अवदान नहीं था उनका मातृभूमि के लिए। आर्य समाज की उनकी निकटता जानकर मन और सात्विक भाव से भर गया। 'विनय पीयूष' में सुकवि अमृत खरे के शब्दामृत काव्यानुवाद से अभिभूत हुआ। उनके शुभ्र सृजन के लिए स्वस्तिवाचन। शासन-सत्ता में प्रविष्ट दूषित राजनीति के प्रति सम्पादकीय में आपकी चिन्ता सर्वथा औचित्यपूर्ण है। शहीद स्थल का उपयोग शहीदों के लिए न होकर वहां नमनायोजन प्रतिबन्धित करना देशभक्ति का अधःपतन ही दर्शाता है। आनन्द नारायण मुल्ला में कदाचित मुल्लापना अधिक प्रभावी रहा जिसके कारण उन्होंने शहीदों की अवमानना का दुस्साहस किया किन्तु इन दुराग्रहों से महान शहीदों के प्रति सम्मान में न्यूनता नहीं आ सकती। 'वाचनालय से' तथा 'जिज्ञासा और समाधान' स्तम्भ यथार्थ ज्ञानवर्द्धन में सहायक हैं। 'अक्षर लोक' में वर्णित पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के सम्पर्क सम्पादकीय पते/मूल्य भी दिया करें जिससे पाठक उनसे जुड़ सकें। 'काव्यायन' में अवसरानुकूल बसंत की छटा दर्शनीय है। मनीषी रचनाकारों को साधुवाद। नवसंवत्सर की विनम्र शुभकामनाएँ।

रंग बिरंगी होली लेकर, आया नवसंवत्सर वर्ष।
नूतन परिवर्तन की वेला, छाया जन-मन में नवहर्ष।
बढ़े दिव्य धन-धान्य, स्नेहपूरित हो वैदिक शांति।
मिटे प्रदूषण, जग में फिर से चमके भारतवर्ष।।

-गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'

११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' फरवरी अंक प्राप्त हुआ, सम्पूर्ण समाचारों से अवगत हुई। 'इतिहास का एक पृष्ठ' से सरदार पटेल की बौद्धिक दूरदृष्टि का सही निर्देश मिल चुका था, जिसका कि उन्होंने आर्यसमाज के मंच से चीन की चुनौती के प्रति आगाह कर दिया था। संपादकीय 'खूने शहीद और स्याही की एक बूंद' शहीदों की याद को ताजा कर गया। 'वेदांजलि' में 'यह मिट्टी का घर मेरी मंजिल नहीं' विशेष सारगर्भित है। धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' सदा की भांति उच्च शिक्षा का

संदेश दे रहा है। 'व्याख्यान माला' में आनन्द गिरि जी का व्याख्यान रोचक तथा प्रेरक है। 'काव्यायन' में सभी कविताएं महत्वपूर्ण हैं। गोपाल सिंह नेपाल का कालजयी काव्य, जयप्रकाश शुक्ल का मामा महात्म, डा.कविता के राष्ट्रीय दोहे तथा 'हर्ष' जी की कविताएं विशेष स्थान रखती हैं। -प्रमोद कुमारी

एम.एस.३७, सेक्टर डी, अलीगंज, लखनऊ

***

वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार एवं 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादन में आपकी निष्पक्ष एवं सत्यनिष्ठा से परिपूर्ण कार्यशैली को मैं विगत एक दशक से लगातार देखता रहा हूँ। आपके कार्य कलापों को देखते हुए मुझे बार-बार महाराज भर्तृहरि द्वारा रचित एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा उद्धृत निम्नांकित श्लोक याद आ जाता है; जो आप पर सटीक बैठता है। वह श्लोक इस प्रकार है-

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वास्तवन्तु।
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरेवा
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

-दीपक दर्शन

१९२, भूसा मंडी, अमीनाबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक पढ़कर मन को अद्भुत आनन्द और शांति प्राप्त होती है। इसके फरवरी अंक में सरदार पटेल जी की महान देशभक्ति और दूरदर्शिता प्रणम्य है। वस्तुतः उनके आर्य समाजी चिन्तन ने ही उन्हें लौह पुरुष जैसा आत्मबल प्रदान किया होगा। शासन सत्ता द्वारा उनकी उपेक्षा के कारण ही देश कमजोर हुआ है। आवश्यकता है पुनः उन्हीं के चिन्तन-दर्शन के अनुसरण की। 'खूने शहीद और स्याही की एक बूंद' सम्पादकीय ने हृदय झकझोर दिया। इसी भावभूमि में गोपालसिंह नेपाली की 'कालजयी गीत' में उद्धृत कविता ने सोने में सुहागा कहावत चरितार्थ कर दिया। आपको साधुवाद। काव्यायन की वासंती कविताओं न सरविभोर कर दिया। 'अक्षर लोक', 'वेदांजलि', 'वाचनालय से', 'अनन्त की खोज' लेखमालाएं भी प्रशंसनीय हैं। नवसंवत्सर तथा होली पर्व की शुभकामनाएं। -सविता वाणी

गौरी गंज, जनपद अमेठी (उ.प्र.)

***

यह पत्र रचनात्मक चेतना का आन्दोलन पर्वोत्सव है। ध्यान रहे, आपके समाचार विचार पत्र के साथ, अनन्यतम सम्बन्ध है। भारत नेपाल के अंतः सांस्कृतिक सम्बन्धों पर आधारित आपका सम्पादित पत्र प्रेरणादायक बना है। मैं पढ़कर धनगढ़ी जन पुस्तकालय वाचनालय, धनगढ़ी भेज देता हूँ। अच्छा लग रहा है आपको और समाचार पत्र को शुभकामना प्रदान करना। रचनाकारों को प्रकाशित व सम्मानित करने का कार्य आपके द्वारा सराहनीय है। हृदय से असीम कामनायें।

-अवधेश शुक्ल, २, ब्रह्मपुरी, सीतापुर

***

लखनऊ-समाचार

ऋषिबोध पर्व पर बृहद् शोभा यात्रा

२७.०२.१४, शिवरात्रि ऋषिबोध पर्व के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भाँति लखनऊ आर्य उपप्रतिनिधि सभा एवं नगर आर्य समाज के तत्वावधान में बृहद् शोभा यात्रा निकाली गई जो श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से प्रारम्भ होकर नाका हिंडोला, गड़बड़झाला, मोहन मार्केट, अमीनाबाद, गाढ़ा भण्डार होती हुई नगर आर्य समाज मंदिर, रकाबगंज में समाप्त हुई। शोभा यात्रा का नेतृत्व सतीश चन्द्र बिसारिया, प्रत्यूषरत्न पाण्डे, अजय श्रीवास्तव, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया, काशी प्रसाद शास्त्री, मनीष आर्य, पाल प्रवीण इत्यादि आर्य नेता कर रहे थे। अग्रिम पंक्तियों में प्रेमशंकर शुक्ल, देवेन्द्र नाथ चौधरी, डॉ.मोहन लाल अग्रवाल, राजीव बत्रा, रवि बिरमानी, भरत लाल, बिल्लेश्वर शास्त्री, रमेशचन्द्र आर्य, के.एन.त्रिपाठी, आलोक चौधरी, कृपाशंकर वर्मा, भोला शंकर, पं.मनोज कुमार मिश्र, नवनीत निगम, वासुदेव आर्य, अतुल कुमार सिंह, डॉ.आर.जी.आर्य, सन्तोष कुमार वेदालंकार, अखिलेश लखनवी, सन्तोष मिश्र, वेदव्रत अवस्थी, विश्वव्रत शास्त्री इत्यादि आर्य समाजों के प्रतिनिधि, उपदेशक, विद्वान प्रवक्तागण चल रहे थे। नामपट्ट एवं ओम् ध्वज सुसज्जित अनेक संस्थाओं के प्रचार वाहन शोभा यात्रा की गरिमा बढ़ा रहे थे- जिनमें श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर, दयानन्द बालिका निकेतन मोती नगर, आर्य समाज शृंगारनगर (डा.रूपचन्द्र दीपक एवं सदस्यगण), आर्य समाज चन्द्रनगर (साथ में जगदीश खत्री, प्रचारवाहन द्वारा अनवरत प्रसाद वितरण होता रहा), आर्य समाज मानसरोवर (कीर्तन करते हुए सदस्यगण), आर्य समाज सदर, आर्य समाज इन्दिरानगर, (रामगोविन्द ठाकुर, डोरीलाल आर्य), आर्य समाज आदर्शनगर (जिला सभा के प्रधान सतीश चन्द्र बिसारिया तथा अम्बरीश अग्रवाल), आर्य समाज महावीरगंज (भजनोपदेशकों द्वारा निरन्तर प्रचार), नगर आर्य समाज रकाबगंज, आर्य समाज हसनगंज पार, आर्य समाज लाजपतनगर चौक (ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, रमा आर्य, श्रीशरत्न), गुरुकुल आश्रम (डा.ओजोव्रत शास्त्री), के नाम प्रमुख हैं। 'आर्य लोक वार्ता' का प्रचार वाहन तथा कार में सम्पादकगण मौजूद थे। कुल मिलाकर गतवर्ष की तुलना में प्रचार वाहनो की संख्या कुछ अधिक ही प्रतीत हो रही थी।

शोभा यात्रा का स्थान स्थान पर पुष्पवर्षा, मिष्ठान्न, फल, रस, चाय द्वारा स्वागत होता रहा। कार्यकर्ता गण गगनभेदी नारे लगा रहे थे तथा जगह जगह भजन संगीत गायन हो रहा था। 'आनंदकंद ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं' तथा 'वेदों का डंका आलम में' जैसे ओजस्वी भावपूर्ण गीतों की ध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं।

(सं.सू.-आनन्द चौधरी, एडवोकेट)

आर्य समाज शृंगारनगर में नवसंवत्सर यज्ञ

वैदिक नवसंवत्सर, २०७१ वैक्रमाब्द के आगमन पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, सोमवार दिनांक ३१ मार्च, २०१४ को आर्य समाज शृंगारनगर के तत्वावधान में निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के संचालक थे पं.रूपचन्द्र दीपक। यज्ञोपरान्त स्थानीय विधायिका डॉ.(श्रीमती) रीता बहुगुणा जोशी के द्वारा पांच विशिष्ट आर्यजनों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वाले हैं- श्रीमती विमला माहना, महेन्द्र पाल मल्होत्रा(चन्द्रनगर), राम शंकर त्रिपाठी(इन्दिरा नगर), श्रीमती सन्तोष जोशी(आदर्शनगर) तथा श्रीमती वीणा उतरेजा(राजाजीपुरम)।

(राकेश माहना, मंत्री)

वेद कथा प्रवचन माला

आर्य समाज इन्दिरा नगर के सहयोग से आर्य समाज गोमती नगर के तत्वावधान में, तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के संरक्षण में ०४.०४.१४ से १३.०४.१४ तक मंडी परिषद, आवास विकास कालोनी, विभूति खण्ड, गोमती नगर में वेद कथा- प्रवचन माला का भव्य आयोजन हुआ। इस आयोजन के प्रायोजक थे- श्री धर्मेन्द्र देव (से.नि.आई.ए.एस.)। श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी, मंत्री आर्य समाज इन्दिरा नगर की सूझबूझ, पुरुषार्थ और परिश्रम से समपन्न इस आयोजन में दस दिनों तक निरन्तर प्रख्यात विद्वान् श्री विष्णु मित्र वेदार्थी, आचार्य संतोष वेदालंकार के प्रवचन तथा श्री मोहित शास्त्री के भजनोपदेश की अविरल धारा प्रवाहित हुई। १३.०४.१४ को प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई। गोमती नगर में पहली बार ऐसा धार्मिक आयोजन देखा गया; जिसका बहुत कुछ श्रेय वैदिक अनुरागी श्री धर्मेन्द्र देव को जाता है।

(सुधा चौधरी)

'सच्चे करें सपने' काव्य का विमोचन

मोतीमहल लान में चल रहे विशाल पुस्तक मेले में श्री पं.हरिओम शर्मा की नवीन कविता की पुस्तक 'सच्चे करें सपने' का विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ; जिसकी मुख्य अतिथि थीं- वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रमा आर्य तथा अध्यक्षता की सी.एम.एस.संस्थापक श्री जगदीश गाँधी ने। आमंत्रित अतिथियों- डॉ.वेद प्रकाश आर्य, उमेश चन्द्र तिवारी आई.ए.एस., अशोक केवलानी, डॉ.रंजन, टी.के., तोमर जी सम्पादक सहारा के नाम मुख्य हैं। कार्यक्रम का संचालन प्रत्यूष रत्न पाण्डेय तथा श्रीशरत्न पाण्डेय ने बारी बारी से किया। मुख्य अतिथि रमा जी ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। विमोचित पुस्तक 'सच्चे करें सपने' की समीक्षा करते हुए डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- यह उद्देश्य परक काव्यकृति है; जिसका लक्ष्य एक श्रेष्ठ समाज की रचना करना है। आज के युग में ऐसी रचनाओं की विशेष आवश्यकता है। समीक्षक डॉ.आर्य ने कहा- शर्मा जी संस्कृति-पुरुष हैं और उनकी कृति भारतीय संस्कृति के सर्वप्रधान गुण आशावाद पर आधारित है। ऐसी उच्चतर जीवन मूल्यों का सृजन करने वाली पुस्तकें पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जानी चाहिए। आयोजकों की ओर से अतिथियों को सम्मानित किया गया तथा उन्हें स्मृति चिन्ह भी भेंट किये गये।

खो गई बुलन्द आवाज़!

नवसंवत्सर की कारुणिक शुरुआत

नव संवत्सर २०७१ विक्रमाब्द की शुरुआत बड़ी ही कारुणिक रही। लोग अभी उर्मिला जी के निधन का शोक भुला नहीं पाये थे कि आर्य समाज के प्रिय नेता कैप्टेन सुखपाल सेन मेहता के दिनांक ०४.०४.१४ को दिवंगत होने के समाचार ने आर्यजनों को झकझोर दिया। उर्मिला निझावन के चले जाने से निःसंदेह आर्य समाज आदर्शनगर को करारा आघात पहुँचा; वहीं कैप्टेन मेहता के जाने से आर्य समाज का ओज और तेज ही मानों छीन लिया गया। लखनऊ आर्यजनों की दो विशेषताएँ दुनियां में चर्चित थीं- स्व.रेवतीरमण जी का 'ओं विश्वानि देव...' मंत्र का उच्च स्वर में पाठ तथा कैप्टेन मेहता के जयघोषों की बुलन्द आवाज़! दोनों से सम्प्रति आर्य समाज रहित और बेबस है! क्या परमेश्वर आर्य जनों पर कृपा करके उपर्युक्त अभावों की भरपाई करने की कोई युक्ति करेगा?

(आलोकवीर, सं.)

उर्मिला निझावन का असामयिक निधन

महिला आर्यसमाज आदर्शनगर की सक्रिय सदस्या श्रीमती उर्मिला निझावन का २८.०३.१४ को गुड़गाँव (हरियाणा) में देहान्त हो गया। वे लगभग एक वर्ष से गुड़गाँव अपने पुत्र नीति निझावन एवं पुत्रवधू अंशू निझावन के पास रह रही थीं। उनकी चिकित्सा की सम्यक् व्यवस्था लगातार श्री सतीश निझावन की देखरेख में चल रही थी। किन्तु विधि के विधान के आगे मनुष्य का कोई जोर कब चला है? २९ मार्च को उनकी अन्त्येष्टि लखनऊ में की गई तथा ३१.०३.१४ को आर्य समाज मंदिर आदर्शनगर में शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा हुई। अश्रुपूरित नेत्रों से वक्ताओं ने श्रीमती उर्मिला को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से उनकी सद्गति हेतु प्रार्थना की गई। वे अपने पीछे पति श्री सतीश जी के अलावा एक पुत्र तथा एक पुत्री का परिवार छोड़ गई हैं।

सम्पादक की डायरी

शान्ति-यज्ञ दि.०३.०३.१४ : श्री रवीन्द्र कुमार वर्मा, बी-६७, सेक्टर-सी, महानगर के आवास पर मातृ-स्मृति यज्ञ।

स्मृति-यज्ञ दि.०५.०३.१४ : स्व.अतुल श्रीवास्तव (भूगर्भ वैज्ञानिक) की पुण्य स्मृति में ए-११२, इन्दिरा नगर में श्रीमती उषा श्रीवास्तव (पत्नी स्व.अतुल) के आवास पर यज्ञ। विनीता श्रीवास्तव ने यज्ञ में भाग लिया। पुत्री अमृता (हांगकांग) तथा पुत्र नीरज (अमेरिका) ने भेजा श्रद्धांजलि संदेश।

गृह-प्रवेश दि.२०.०३.१४ : श्री पीयूष रत्न पाण्डे के नवनिर्मित आवास 'शैलामृतम्' पारा में वेदविदुषी सुश्री निष्ठा विद्यालंकार के आचार्यत्व में वैदिक विधानानुसार गृहप्रवेश सम्पन्न। श्री वी.एस.पाण्डे, रमा आर्य, ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, जय प्रकाश शुक्ल, शत्रुघ्नलाल मिश्र, डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पारिवारिक जन उपस्थित। ज्ञातव्य है कि श्री पीयूष सम्प्रति भाभा आणविक केन्द्र, मुम्बई में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी हैं तथा श्री वी.एस.पाण्डे व श्रीमती रमा आर्य 'रमा' के ज्येष्ठ पुत्र हैं।

होली मिलन दि.२४.०३.१४ : आर्य समाज लाजपतनगर चौक के तत्वावधान में होली मिलन पर्व पर यज्ञ सम्पन्न हुआ। नगर के आर्यजन बड़ी संख्या में आर्य समाज मंदिर में एकत्र हुए। श्री पाल प्रवीण, ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी पूर्व प्रधान, आचार्य वेदव्रत अवस्थी, सतीश चन्द्र बिसारिया तथा आर्य समाजों के अन्यान्य प्रतिनिधियों ने होली की शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया।

योग महोत्सव दि.२३.०३.१४ : गोमती नगर, दयाल लान्स में योग महोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में योग प्रेमियों ने समारोह में भाग लिया तथा होली की शुभकामनाओं का आदान प्रदान किया। योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के संदेश से सभी को अवगत कराया गया। संयोजक-श्री पीयूषकान्त, अध्यक्ष पतंजलि योग समिति (लखनऊ पूर्व)।

जन्म दिवस दि.३०.०३.१४ : आर्य समाज मंदिर चन्द्रनगर में साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर प्रधान श्री जगदीश खत्री का ८५वाँ जन्म दिवस मनाया गया। आचार्य वेदव्रत अवस्थी, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री, श्री ललितमोहन सिंह पूर्व आई.जी. एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने खत्री जी के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला तथा श्री खत्री जी के साथ श्रीमती खत्री जी के दीर्घायु और सुस्वास्थ्य की कामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर खत्री जी के सभी पुत्र, पुत्रियाँ तथा पौत्र उपस्थित थे। खत्री जी के पौत्र-ऋषि, आशीष के एन.डी.ए. में चयनित होने पर हार्दिक बधाई दी गई। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

नव संवत्सर यज्ञ दि.३१.०३.१४ : नव संवत्सर के पर्व पर श्री शिवशंकर लाल वैश्य के आवास एम.एम.एस-१/८८, स्टेट बैंक कालोनी, अलीगंज में यज्ञ-सत्संग का आयोजन हुआ। यज्ञोपरान्त आचार्य विश्वव्रत तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने पर्व की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री पाल प्रवीण, रामलखन शुक्ल, सुरेश चन्द्र मिश्र ने पर्व पर शुभकामनाएँ दीं तथा श्रीमती सीतादेवी मिश्र ने भजन प्रस्तुत किया। यज्ञ के यजमान पद पर प्रतिष्ठित थीं श्रीमती शिवानी (पुत्री-चौ.रणवीर सिंह) अपने पतिदेव के साथ। श्री अमृत वैश्य श्रीमती कुमुदनी वैश्य, राजाभइया गुप्त इत्यादि अनेक गण्यमान व्यक्ति मौजूद थे।

गृह प्रवेश दि.०२.०४.१४ : सेक्टर-ई, विश्वास खण्ड-१, गोमती नगर में अपने नवनिर्मित गृह में श्री अजय कुमार जैन एवं श्रीमती सुमन जैन ने सपरिवार प्रवेश किया। इस अवसर पर वैदिक विधि से गृह प्रवेश संस्कार की प्रक्रिया वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने पूर्ण कराई। यज्ञ में अजय के पिता श्री निर्मल कुमार के साथ समस्त जैन परिवार के सदस्यगण सम्मिलित हुए। अल्पाहार एवं प्रीतिभोज की सुंदर व्यवस्था की गई। अजय जी ने अतिथियों को उपहार भी वितरित किये।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234,
हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली)
पो०-इन्दिरानगर,
लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 00500 2000 00579
खाते का प्रकार–चालू खाता
बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ।

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

'आर्य्य लोक वार्ता' के स्वामित्व आदि का विवरण

1. प्रकाशन का स्थान :
   'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
2. प्रकाशन की अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम :
   डॉ. वेद प्रकाश आर्य
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
4. प्रकाशक :
   डॉ. वेद प्रकाश आर्य
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
5. सम्पादक :
   डॉ. वेद प्रकाश आर्य
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
6. स्वामित्व :
   डॉ. वेद प्रकाश आर्य
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016

मैं (डॉ. वेद प्रकाश आर्य) एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर लिखा सब विवरण सत्य है।
–डॉ. वेद प्रकाश आर्य